टमाटर से जीवन में आयी लालिमा

यह कहानी है डिण्डौरी विकास खण्ड के ग्राम कुईमाल के दरबारी लाल की जो आज अपनी लगन और साहस के दम पर एकीकृत जल ग्रहण क्षेत्र प्रबन्ध कार्यक्रम के सहयोग से खेती को लाभ का धन्धा बनाया और क्षेत्र मे अपनी अलग पहचान बनायी । हम दरबारी लाल के विषय में जानने से पहले यह समझने की कोशिश करते है कि क्षेत्र की पृष्ठभूमि क्या है।

प्रासंगिक पृष्ठभूमि और जनसांख्यिकीय जानकारी

डिण्डौरी भारत के मध्यप्रदेश राज्य का एक जिला है। डिण्डौरी जिले की स्थापना 25 मई 1998 में हुई थी पहले यह मण्डला जिले का हिस्सा हुआ करता था । वर्तमान में यह जबलपुर संभाग का एक हिस्सा है। यह जिला मुख्यालय है । यहॉ पर कुल 927 गॉव है, जो कुल 7470 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र मे फैला हुआ है एवं छत्तीसगढ़ राज्य की सीमा से लगे मध्यप्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित है। यह उत्तर में उमरिया पश्चिम में मण्डला पूर्व मे शहडोल से घिरा हुआ है और दक्षिण मे छत्तीसगढ राज्य का बिलासपुर जिला है। गणितानुसार जिला अक्षांश 22.17 एन और 23.22 एन देशांतर 80.35 ई और 80.58 ई में है। जिले मे कुल सात विकासखण्ड है – डिण्डौरी, शहपुरा, मेहदवानी, अमरपुर, बजाग, करंजिया एवं समनापुर ।

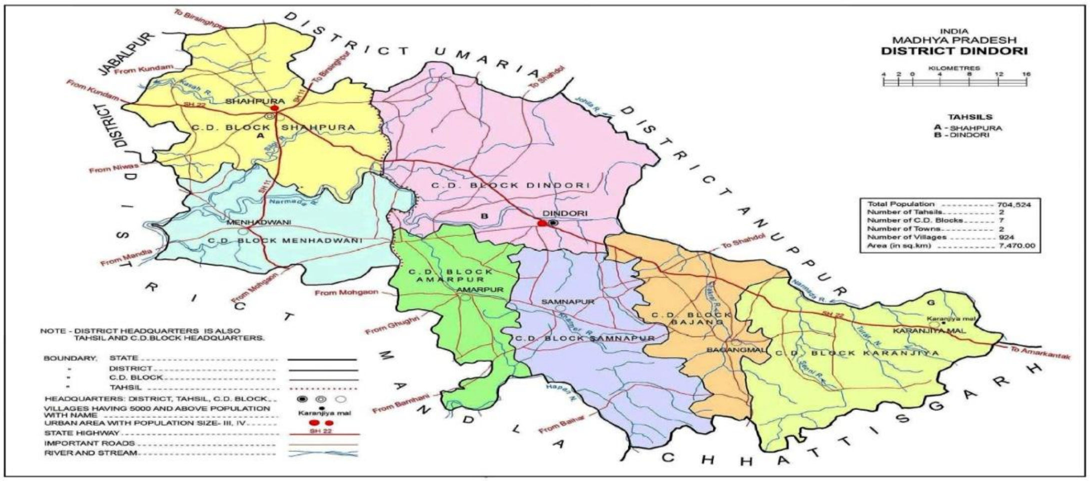

डिण्डौरी जिले का मानचित्र

2011 की जनगणनानुसार डिंडौरी जिले की कुल आबादी लगभग 7,04,218 लाख है । यह आबादी भूटान राष्ट्र के लगभग है। यह आकड़ा 640 जिलों की कुल मे से द्ध जिले को भारत मे 501 की रेकिग देता है। जिले का जनसंख्या घनत्व 94 निवासी प्रति वर्ग किलोमीटर है। दशक 2001–2011 में जिले की जनसंख्या वृद्वि दर 21.26 % थी । डिण्डौरी मे लिंगानुपात 1000 पुरूषों के मुकाबले 1004 महिलायें है और साक्षरता दर 65.47 % है। कुल जनसंख्या का लगभग 64% अनुसूचित जनजाति के लोग निवास करते है। बैगा जनजाति जिले मे बहुत ही प्रमुख जनजाति है । बैगा जनजाति को राष्टीय मानव के रूप मे भी जाना जाता है। डिण्डौरी जिले मे घुघवा जीवाश्म राष्टीय उद्यान स्थिति है।

ग्राम कुईमाल जिला मुख्यालय एवं डिण्डौरी विकासखण्ड से 32 किलो मीटर दूर घने जंगलों के बीच बसा हुआ है। यहॉ पर कुल परिवारों की संख्या 194 है जिसमें 90 प्रतिशत परिवार जनजाति समाज के लोग निवास करते है जिसमें बैगा एंव गौंड जातियां है। इनके आजिविका का मुख्य संसाधन मजदूरी तथा वन उपज पर आधारित है। ग्राम में शासकीय माध्यमिक स्कूल है एवं हाई स्कूल की पढ़ाई के लिए 12 किलोमीटर दूर ग्राम टीकरी पीपरी जाना पड़ता है। ग्राम में दो आंगनबाडी केन्द्र है, ग्राम में आवागमन हेतू एक बस सुबह ग्राम सें डिण्डौरी जाती है और शाम कों वापस आती है। ग्राम में दो चार घरों के पास मोटर साईकल है। ग्राम में विद्युत नहीं है। दरबारी लाल ही अपने घर के मुखिया है, उनके परिवार में कुल 8 सदस्य है, दरबारी लाल आठवी पास है, उनकी पत्नी ग्रहणी है जों उनका खेती बाडी में हाथ बटाती है। दो लडकें तथा तीन लडकीयॉ है। तथा उनकी माता जी उनकें साथ रहती है। उनके पास कुल 4.25 एकड खेत है जिसमें मात्र खरीफ की ही फसल ले पाते है। क्योकि 4.25 भुमि असिंचित है। उनकी आजिविका का मुख्य साधन मजदूरी है। वे ग्राम से 70 किलो दुर उमरिया जिले के पाली विद्युत परियोजना मे मजदुरी का कार्य करते थे जिससे उनको 200 रूपये रोज की दर सें मजदुरी मिल जाती थी उनका परिवार घर पर रहता है। वे महीने दो महीने मे आवश्यकता अनुसार घर पर आते थे उनकी बडी लडकी आठवी पास है घर पर रहती उनकें दों बच्चे ग्राम कें स्कुल में अध्ययनरत है।

निर्दिष्ट करने की वजह –:

ग्राम की लगभग 90 प्रतिशत खेती वर्षा आधारित है, वही पर दूसरी तरफ मृदा–क्षरण के कारण कृषि हेतु उपजाऊ बेश कीमती मिट्‌टी शनै–शनै घटती जा रही है तथा वर्षा के जल में बहकर नदी–नालों में पहुँच कर धीरे–धीरे नदियों के अस्तित्व को समाप्त करते जा रही है। इन क्षेत्रों के वानस्पतिक आवरण में कमी मृदा–क्षरण का प्रमुख कारण है, जिसके परिणाम स्वरूप जल भण्डारों तथा भू–जल स्तर में कमी होने लगी है तथा कृषि उत्पादन अनिश्चित होने लगा है। इस ग्राम में कुल कृषि योग्य भुमि 336.96 हैक्टेयर है जिसमें सिंचित कृषि भूमि मात्र 42.46 हैक्टेयर है। जिसके कारण यहॉ के लोगो को मजदूरी हेतू पलायन करना पडता है। इस बात कों ध्यान में रखते हुए राजीव गाधी वाटरशेड मिशन भोपाल द्वारा ग्राम में एकीकृत जल ग्रहण क्षेत्र प्रबन्धन कार्यक्रम का क्रियान्वयन कार्ड संस्था के सहयोग से किया जा रहा है।

समस्या की पहचान और क्रियान्वन की प्रक्रिया –:

ग्राम मे मुख्य समस्या की पहचान के लिए ग्राम सभा का अयोजन किया गया इसमें परियोजना के कार्यकर्ता भी सामिल हुई । चर्चा के दौरान यह बात निकल कर सामने आयी कि ग्राम में कृषि सिचाई हेतू वाटर सरंचना का निमार्ण करना होगा जिसमें तकनीकि उपयन्त्री के मार्गदर्शन में निजी और शासकीय भुमि पर आवश्यकता अनुसार संरचना का निमार्ण किया जायेंगा । इस कार्य हेतू डब्ल्यू.डी.टी. के सदस्य नेट प्लानिगं के माध्यम से कार्य किया और ग्राम की विस्तृत कार्य योजना का तैयार किया जिसमें वाटर संरचना आजिविका तथा कृषि उत्पादन प्रणाली के साथ –साथ क्षमता विकास की कार्य योजना बनायी गयी । तद उपरान्त उसे ग्राम सभा सें अनुमोदन कराया गया । नेट प्लानिगं कें दौरान श्री दरबारी लाल नें अपनें खेत में खेत तालाब बनवानें का निर्णय किया ।

खेत तालाब का क्रियान्वयन –:

श्री दरबारी लाल के निजी भुमि पर खेत तालाब बनाने का कार्य माईक्रोवाटर शेड समिति के माध्यम सें किया गया । खेत तालाब 35*35 मीटर का था जिसकी कुल लागत 4.23 लाख रूपया आया । जिसमें परियोजना नियमानुसार कुल 5 प्रतिशत राशि विकास निधि खाता में अंशदान के रूप मे जमा करना था जिसकी कुल लागत 21150 था जिसमें उन्हेंानें यह निर्णय लिया की आधी राशि नगद कें रूप में और आधी राशि मजदुरी कें रूप में कार्य करकें जमा किया । वर्षा कें बाद तालाब में कुल 850 घन मीटर पानी भरा । श्री दरबारी लाल नें तालाब कें इस पानी सें आधुनिक सब्जी खेती करनें का निर्णय लिया और माह अक्टुबर 2013 में पाली सें नौकरी छोड कर खेती करनें का निर्णय लिया । उन्हेंानें परियोजना कें कृषि विषय विषयज्ञ से मर्गदर्शन में अपने एक एकड खेत में टमाटर की खेती करनें का निर्णय लिया ।

श्री दरबरी लाल का खेत तालाब

कृषि विभाग सें समन्वय –:

अब भी तालाब का पानी खेतों तक कैसें लाया जाय यह समस्या बनी हुई थी । अपनी समस्या कों टीम लीडर सें चर्चा किया । कृषि विभाग सें और बैक सें किसान केडीट कार्ड कें सहायता सें 40 हजार का ऋण लिया जिसमें कृषि विभाग को 15 हजार रूपया डीजल पम्प और सिंचाई पाईप हेतू दे दिया जिससें खेत में पानी लानें हेतू सिचाई कि सुविधा उपलब्ध हो गई ।

टमाटर की खेती –:

भी क्या अपनें एक एकड खेत की तैयार शुरू कर दिया और लक्ष्मी किस्स की टमटार की बीज जबलपुर सें लाकर नर्सरी हेतू डाल दिया । टमाटर की खेती में बीज, दवाई, खाद , जुताई, पानी हेतू डीजल आदि में कुल 12500 रूपया का खर्च आया । बीच –बीच में श्री सुनिल शर्मा जी मार्गदशर्न देतें रहें जिसमें श्री दरबारी लाल की फसल काफी अच्छी हुई ।

बिक्री विवरण एवं लाभ की गणना –:

डिण्डौरी बाजार और आस - पास कें क्षेत्रों में टमाटर की बिक्री किया जानें लगा । श्री दरबारी जी कें अनुसार - प्रत्येक हप्ते एक बार - टमाटर निकल जाता है एक बार में 20 सें 25 कैरेट टमाटर तोडा जाता है। एक कैरेट में 25 किलों टमामर आता है। कुल तीन माह ;नवम्बर ,दिसम्बर और जनवरी द्धमाह में 292 कैरेट टमाटर बेचा है। नबम्बर माह में 100 कैरेट तथा दिसम्बर माह में 104 कैरेट एंव जनवरी माह में 88 कैरेट टमाटर बैचा है। जिसमें अलग - अलग कीमत प्राप्त हुई औसतन 320 सें रूपया प्रति कैरेट की दर सें बेचा गया । अभी तक कुल 93400 हजार रूपया का टमाटर की तीन माह में बेचा हूॅ । मेरी कुल लागत टमाटर की खेती में 12500 रूपया लगा था अगर मुनाफ की बात करें तों 80940 रूपया का लाभ मिला है।

आगामी कार्य योजना –:

ग्रीश्मकालीन फसल लेने के लिए दरवारी जी ने एक एकड मे फूल गोभी लगाने का निर्णय लिया । जिसके लिऐ उन्होनें उचित समय पर नर्सरी तैयार कर खेत में पौध रोपण का कार्य इसके लिए वो समय -समय पर उचित मार्गदर्शन लेते रहे ।

ग्रीश्मकालीन फसल से दरवारी को 25 से 30 हजार रूपये की फूलगोभी का विक्रय किया जिसमे कुल लागत पर 8500 खर्च किये गोभी की फसल से दरवारी को 21500 रूपये आय के रूप मे प्राप्त हुये ।

फलदार पौधा रोपण–:

दरवारी जी ने एक एकड क्षेत्र मे अनार के पौधे लगाया है जों की भगवा किस्म का है। उन्होनें अपनें एक एकड खेत में कुल 65 अनार कें पौधें लगाया है। उन्होने जुलाई माह के अन्त मे एक एकड क्षेत्र मे अनार के पौधे लगाये और उसी खेत में सधन खेती के रूप मे टमाटर की फसल लगाई । जिससे उनको डबल लाभ प्राप्त होगा ।

आर्थिक जीवन में प्रभाव –: श्री दरबारी लाल कें सब्जी उत्पादन कार्य सें उनकें परिवार कें आर्थिक जीवन पर कई हद तक प्रभावीत किया है। उन्होनें बैक सें लिया 40 हजार ऋण भी एक वर्ष कें अन्दर जमा कर दिया । अब वें मकान बनानें की दिशा में कार्य कर रहें है। घर

पर आज दो जोडी बैल तथा एक गाय और एक भैस तथा चार बकरी है। आठ दस देशी मुर्गी पाल रखी है। जों कि उनकें पास नही थी । आवागमन हेतू साईकील ले लिया है। उनकी योजना मुख्यमन्त्री रोजगार योजना कें अर्न्तगत छोटा हाथी लेने की है। जिससें वें आस–पास कें मंन्डी तक सब्जी खुद ले जा कर बेच सकें ।

सामाजिक जीवन पर प्रभाव –: आज श्री दरबरी लाल अपनें परिवार कें बिच रहतें हैं और अपनें परिवार तथा घर की देख रेख भी करतें है। उनकें सहासह और अर्तनिर्भरता कों देख कर ग्राम तथा क्षेत्र में उनका कुनवा काफी हद तक बढा है आज वें ग्राम समान्नीय नागरिक में सें एक है। उनकी बडी लडकी और दों लडकें डिण्डौरी में किराया का मकान लेकर स्कूलीय शिक्षा ग्रहण कर रहें है। आज ग्राम कुईमाल में कुल 12 किसान सब्जी उत्पादन कार्य सें संवेहनीय अजिविका के रूप में जुड चुके है।

आज श्री दरबारी लाल जी सब्जी की खेती अच्छी करतें हैं उनकें इस मेहनत कों देख कर न केवल गॉव के बल्कि आस – पास कें लोग भी सब्जी की खेती करना सीख रहें है। एकीकृत जल ग्रहण क्षेत्र प्रबन्धन कार्यक्रम के सहयोग सें उनकें घर खेत तालाब बनाया गया है। जिससें वें सब्जी की खेती कर रहें है , उनकें इस मेहनत और प्रयास सें ग्राम का सम्मान बडा है।

(श्री मिलन सिंह धुर्वे, ग्राम पंचायत सचिव कुईमाल डिण्डौरी)

वाटरशेड परियोजना सें ग्राम के किसानों कों न केवल खेती के लिए पानी मिला बल्कि उनकों आधुनिक खेती करनें के तैर – तरीका भी सिखाया गया इसी का एक सफल उदाहरण है श्री दरबारी लाल जी उन्होने खेती का लाभ का धन्धा बनाया है।

(श्री लखन सिंह पटटा, माईकोवाटरशेड समिति ग्राम कुईमाल)